PAPER-6, UNIT-3, SECTION-A

ESKIMO एस्किमो

एस्किमों आर्कटिक सागर के तटीय भागों में पूर्वी ग्रीनलैण्ड से संपूर्ण उत्तरी कनाडा तथा अलास्का के तटीय भागों में निवास करने वाली जनजातियाँ है। ये टुण्ड्रा प्रदेश के बर्फाच्छादित क्षेत्र के विषम वातावरण में प्रकृति से समायोजन कर निवास करते हैं। डा० रिंक ने इस जनजाति का विशेष अध्ययन किया है। रेड इन्डियन ने इनको — एस्किमों नाम दिया जिसका अर्थ होता है "कच्चा मांस खाने वाला। किन्तु एस्किमो अपने को इनुइत Innui कहते हैं। जिसका अर्थ होता है "मानव", एस्किमों 65° से 70° उत्तरी अक्षांशों के बीच बेफिन क्षेत्र के तटीय भागों तथा हडसन की खाड़ी के तटीय भागों मे निवास करते हैं।

उत्पति :- एस्किमों की उत्पति संबंधित ज्ञान काफी विवादास्पद है। शीषल्स की खाड़ी के तटीय भागों के कब्रों से प्राप्त अस्थियों के आधार पर अनुमान लगाया गया है कि आज से दो या तीन हजार वर्ष पहले ये साइबेरिया में निवास करते थे प्रथम शताब्दी में ये बेरिंग जल-डमरूमध्य से उत्तरी अमेरिका मे प्रवासित हुए। इनके अमेरिका में आने के बाद दो प्रकार की संस्कृतियों का विकास हुआ। कुछ

एस्किमो का यूरोपीय लोगो से अत्यधिक रक्त मिश्रण हुआ है। जबकि कुछ शुद्ध रक्तवाले एस्किमो भी है जो ध्रुवीय सागरीय द्वीपो, कुमनिया अन्तरीप तथा स्लैक रिवर क्षेत्र मे बसे है।

शारीरिक बनावट :-

एस्किमो की लम्बाई 150cm से 160 cm के बीच होती है। इनका चेहरा चौड़ा तथा सपाट होता है। बाल काले मोटे तथा सीधे होते है और आँखों की पुतली का रंग कत्थई होता है। इनकी पलके तिरछी होती है। तथा त्वचा का रंग पीला होता है।

चारीत्रिक विशेषताएँ :-

चारीत्रिक विशेषताएँ

- एस्किमो वातावरण से काफी समीप होते है।
- ये बहादुर, निडर, निष्कपट ईमानदार, सत्यवादी तथा धैर्यशील होते है।
- शिकार के लिए इन्हे काफी परिश्रम करना पड़ता है।
- ये हँसमुख, प्रसन्नचित तथा परिश्रमी होते है।

आवास :- एस्किमो उच्च अक्षांशों में रहते हैं जहाँ साल के नौ दस महीनों में तापमान हिमांक से नीचे रहता है। यहाँ आवास निर्माण के लिए बांस या लकड़ी उपलब्ध नहीं होते हैं। अतः वे अपना घर बर्फ तथा जानवरों के खाल से बनाते हैं। शीतकालीन आवास बर्फ के टुकड़े को सजाकर बनाया जाता है। जिसे Igloo (इग्लू) कहते हैं। इसका आकार गुम्बदाकार होता है, इसके प्रवेश करने के लिए छोटा सा दरवाजा होता है। जिसमें पेट के बल सरककर अंदर घुसा जाता है। इग्लू के भी तरो दिवाल को सील की खाल से मढ़ दिया जाता है। जिससे घर गर्म रहता है।

खाद्य सामग्री :- इस शीत मरुस्थल में न तो कृषि की जा सकती है। और न तो वनों से खाद्य संग्रह, अतः भी जलाना असम्भव है। अतः एस्किमो शिकार से प्राप्त मछलियों, जीवजंतुओं आदि का कच्चा मांस खाकर जीवन यापन करते हैं। इनके भोजन में सील कैरीबू, वालरस, बारहसिंगा, ध्रुव भालू, कुरैल, खरगोश आदि जानवरों का मांस प्रधान होते हैं।

ग्रीष्म काल में थोड़े समय के लिए पौधे से रसभरी तथा इसके फल-फूल भोजन के लिए मिल जाते हैं।

उपकरण :-

एस्किमो उपकरणों के विकास मे अन्य जन-जातियों से काफी आगे है। प्रत्येक परिवार एक कुत्ता अवश्य पालता है जो शिकार मे सहायता करता है। इनके प्रमुख उपकरण निम्न है

उपकरण

- स्लेज गाड़ी
- कायाक (Kayak)
- उमियाक (Umiyak)
- हारपून (Harpoon)
- बरमा (Bow Drill)

आर्थिक क्रिया-कलाप :-

एस्किमो का सर्वप्रथम आर्थिक क्रियाकलाप शिकार है। इनका आखेट विभिन्न मौसमों में स्थानान्तरित होता रहता है। इस प्रकार इस आधार पर तीन प्रकार के आखेट होते है

आर्थिक क्रिया-कलाप

- वसन्तकालीन आखेट
- ग्रीष्मकालीन आखेट
- शीतकालीन आखेट

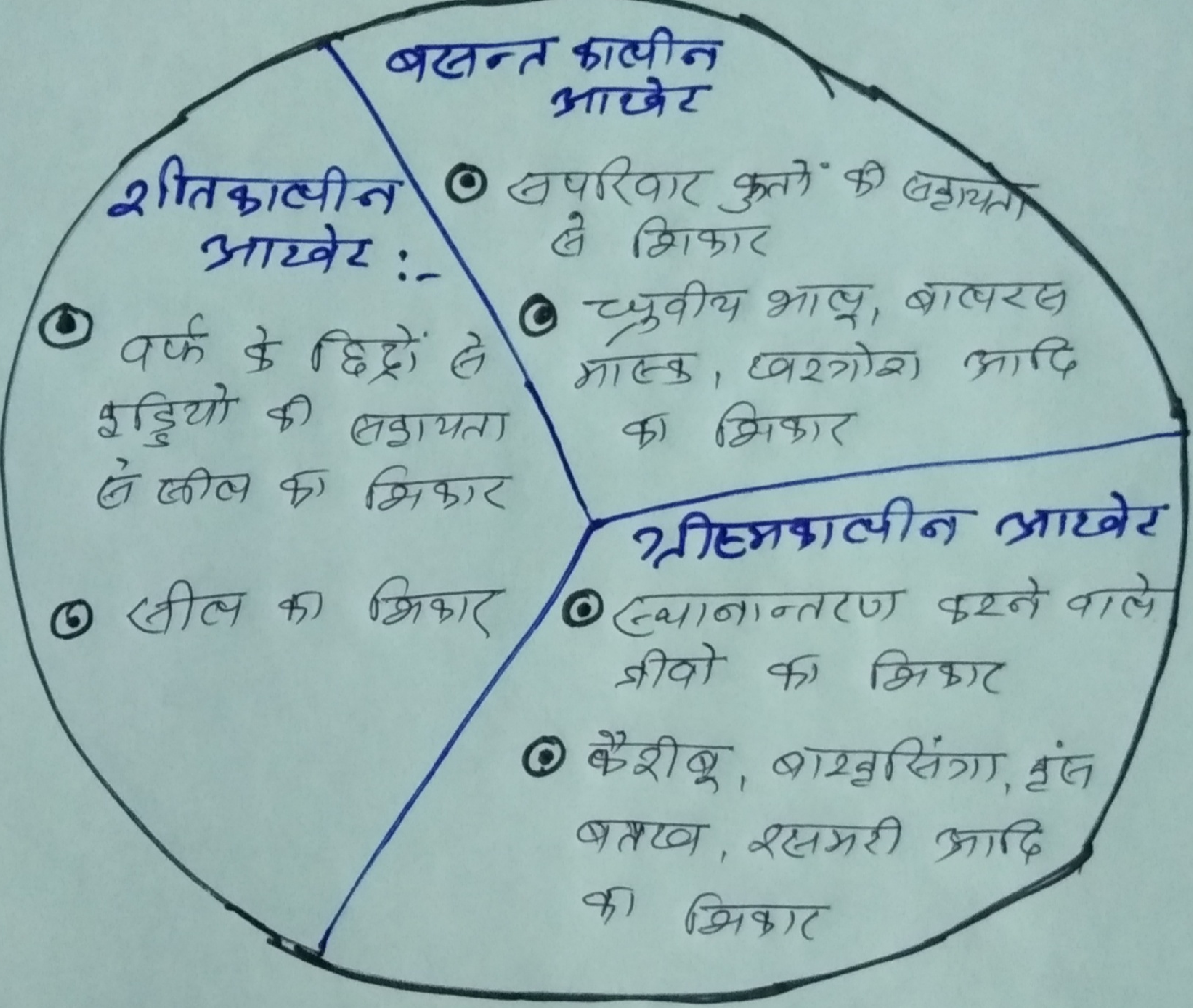

धार्मिक विश्वास :— ये किसी खास धर्म को नहीं मानते हैं किन्तु प्रकृति की आत्मा को स्वीकार करते हैं। ये जीव, मृत, आत्माओं तथा भूत-प्रेत में विश्वास करते हैं। इनके समाज में जादूगर सबसे प्रभावशाली व्यक्तित्व माना जाता है। जो तंत्र/मंत्र द्वारा इनकी बिमारीयों या समस्याओं का समाधान करता है।

सामाजिक व्यवस्था :-

आधुनिक समय में एस्किमों की संख्या 50000 से 80000 है। भ्रमणशील जीवन के कारण इनका सामाजिक संगठन इतना मजबूत नहीं होता है सम्पूर्ण एस्किमों कई बड़े - बड़े समूहों में विभक्त होते हैं तथा प्रत्येक समूह कई छोटे - छोटे दलों में। प्रत्येक दल का निवास स्थान निश्चित होता है। इनके गाँव 15 से 60 km की दूरी पर स्थित होते हैं। एक गाँव के सभी परिवारों में घनिष्ठ संबंध होता है। प्रत्येक गाँव का एक मुखिया होता है जो एस्किमों को — स्थानान्तरण संबंधी सलाह देता है। आखेट की प्रमुखता के कारण शिकारी को समाज में काफी सम्मान मिलता है। वैवाहिक संबंध दूसरे दलों से होता है। इनमें बहुपत्नी प्रथा है अर्थात् एक एस्किमो कई दलों की युवतियों से शादी कर सकता है। इससे वह कई क्षेत्रों में शिकार का अधिकारी बन जाता है।

Dr. Mukul Kumar